THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परहेज़, प्रार्थना का एक पूरक
Fasting, a complement to prayer

Christian Science Sentinel

Author – Lawrence "Chip" Horner

Volume 115, Issue 13, April 1, 2013

याद है दौरे पड़ने वाले लड़के का पिता जो जीसस के पास गया था? (देंखे मत्ती 17:14 – 21)। पिता ने जीसस को अपने पुत्र के बारे में बताया जो बहुत बीमार था और यह कि शिष्य उसका उपचार करने में असफल रहे। इस खबर को सुनकर जीसस ने कहा, "हे अविश्वासी तथा दुष्ट पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? मैं कब तक तुम्हे सहन करूँगा? उसे इधर मेरे पास लाओ।" और उन्होंने तुरन्त उस लड़के को स्वस्थ कर दिया। बाद में, शिष्यों ने एकान्त में उनसे पूछा: हम लड़के को स्वस्थ क्यों नहीं कर सके? जीसस ने जवाब दिया, "तुम्हारे अविश्वास के कारण : . . . ऐसा प्रार्थना तथा परहेज़ के बिना नहीं होता।"

"परहेज़" का विचार मुझे महत्वपूर्ण लगा। नि:संदेह हम काफी प्रार्थना करते हैं, परन्तु क्या हम "परहेज़" करते है? मेरे लिए, इस तरीके से परहेज़ शब्द का अर्थ यह है कि साहसपूर्वक तथा दृढ़तापूर्वक उसका खण्डन करना तथा उसे अस्वीकृत करना जो भौतिक इन्द्रियाँ हमें दिखाती हैं। अक्सर हमें एक समस्या के एक बोझिल भाव से परहेज़ रखना चाहिए। यदि हम सोचते हैं हमारे पास हल निकालने के लिए एक समस्या है यह हमें उलझा सकती है। हमारी प्रार्थना में, हम आग्रह कर सकते हैं परमेश्वर, आत्मा, समन्वय सर्वस्व है, और इस प्रकार आध्यात्मिक चेतना सर्वश्रेष्ठ है। हम अपनी प्रार्थना में पुष्टि करना चाहते हैं कि हमारी परमेश्वर–देय सम्पूर्णता अटूट है, जब हम परहेज करते हैं, या नश्वर समझ के बेईमानी झूठ से दूर रहते हैं, जो दावा करती है कि परमेश्वर की रचना में कुछ भी असामान्य या गलत है।

क्या हमारा प्रेममयी पिता अपने बच्चों के लिए समस्याएँ बना सकता है और उन्हें दे सकता है? नहीं, परमेश्वर प्रेम है, और जो कुछ भी उस महान तथा एकमात्र प्रेममयी कारण से उत्पन्न होता है, सम्पूर्णता, स्वास्थ्य, स्थिरता तथा शांति है। मेरी बेकर एडी, जिसने क्रिश्चियन साँयस की खोज की, (साँयस एण्ड हैल्थ में विद् की टू द स्क्रिपचर्स में पृष्ठ 229 पर लिखती है, "यह नश्वर मन के एक मत का उल्लंघन करना है, न तो भौतिकता के कानून का, न ही दिव्य मन का, जो बीमारी का मत उत्पन्न करता है। उपाय, सत्य है, न कि भौतिकता,–सत्य, कि रोग *अवास्तविक* है।" परहेज़ करना, भौतिक पदार्थ तथा दैहिक अवस्थओं की इन्सानी समझ की बजाए दिव्य आत्मा के पैमाने में अधिक विश्वास उड़ेलने का हमारा भरसक प्रयत्न है, ताकि हम देख पाएं कि आत्मा बाकी सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में कुछ भी आत्मा और इसकी अभिव्यक्ति से अलग नहीं है।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जीसस परहेज़ करने में माहिर थे,–त्रुटि के वास्तविक होने की भर्त्सना करने में। श्रीमति एडी, जीसस के बारे में कहते हुए, साँयस एण्ड हैल्थ में लिखती हैं, "त्रुटि के लिए एकमात्र नौतिक दण्ड जो उनके पास था, 'शैतान तू मेरे सामने से हट जा', तथापि प्रभावशाली प्रमाण कि जीसस की फटकार उनके अपने शब्दों में स्पष्ट तथा तीखी थी ऐसे प्रभावशाली उच्चारण की ज़रूरत को दर्शाते हुए, जब उन्होंने दुष्टात्माओं को निकाल फैंका और रोगियों तथा पाप करते हुओं का उपचार किया। त्रुटि का त्याग भौतिक समझ को इसके झूठे दावों से वंचित कर देता है" (पृष्ठ 7)

मेरे महाविद्यालय के दूसरे वर्ष में, एक सफेद दाग मेरे एक पैर की अंगुली पर दिखाई दिया और फिर साथ वाली अंगुली पर। मैंने उनके बारे में कुछ नहीं सोचा। दाग बढ़ते गए जब तक कि एक अंगुली पर गहरा ज़ख्म नहीं बन गया। मैंने अंगुलियों पर पट्टी बाँध दी। मैने अपने लिए प्रार्थना करना आरम्भ किया और एक क्रिश्चियन साँयस प्रैक्टिशनर से सहायता के लिए कहा। समस्या बदतर हो गई, और मेरे कमरे में रहने वाला भयभीत हो गया। भरसक प्रयत्न के बाद, कुछ भी सुधार नज़र नहीं आ रहा था, मैं परेशानी की चरम सीमा तक पहुँच गया था। मुझे उससे "परहेज़" की आवश्यकता थी जो इन्द्रियाँ मुझे बता रही थी और सत्य की तरफ मुड़ने की।

अक्सर हमें एक समस्या के एक बोझिल भाव से परहेज़ रखना चाहिए

मैंने जल्दी ही अपनी प्रार्थनाओं में, अत्याधिक स्पष्टता के साथ अनुभव किया, उत्पत्ति 1:31 में से यह पंक्ति, "और **परमेश्वर** ने सब कुछ देखा कि **उसने** जो कुछ भी बनाया था और देखो, यह बहुत अच्छा था।" मैंने अनुभव किया "सब कुछ" मुझे शामिल करते हुए। मैं पूर्ण था, मैं सम्पूर्ण था, और मैं पूर्ण रूप से अच्छा था। तीन दिन से भी कम समय में मैं पूरी तरह से स्वस्थ था, और वहाँ कोई दाग भी नहीं पड़ा

परमेश्वर की सर्वस्वता तथा प्रेम में अत्याधिक विश्वास के साथ प्रार्थना करते हुए, बेईमान भौतिक इन्द्रियों के द्वारा नियोजित की गई किसी समस्या से परहेज़ करने का आधार हमारे पास है। हम परहेज़ कर सकते है और उस पर डटे रह सकते हैं जब तक स्वस्थ न हो जाएं।

Translation © 2013 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.